

भिण्डी की महत्वपूर्ण बीमारियाँ एवं उनका नियंत्रण



**पंकज कुमार¹, गौरव सिंह¹,
विनोद कुमार¹, विजय¹,
ऐनी खन्ना² व नवीन¹**

¹महाराणा प्रताप उद्यान
विश्वविद्यालय, करनाल
²भारतीय गेहूँ एवं जौ अनुसंधान
संस्थान, करनाल

*अनुरूपी लेखक
पंकज कुमार*

दैनिक भोजन में सब्जियों का विशेष महत्व है। भिण्डी एक लोकप्रिय सब्जी है जिसे सब्जी और अचार दोनों रूपों में खाया जाता है। इसकी फसल फरवरी-मार्च तथा जून-जुलाई में बोई जाती है। अच्छी पैदावार और बेहतर गुणवत्ता प्राप्त करने के लिए भिण्डी की बीमारियों की सही पहचान और समय पर रोकथाम बहुत आवश्यक है।

1. पीला मोज़ेक रोग (Yellow Mosaic Virus)

लक्षण: यह एक विषाणु जनित रोग है जो मुख्य रूप से सफेद मक्खी द्वारा फैलता है। शुरुआत में पत्तियों पर छोटे-छोटे पीले धब्बे दिखाई देते हैं। धीरे-धीरे यह धब्बे बड़े होकर पूरी पत्ती को ढक लेते हैं। पत्तियाँ पूरी तरह पीली होकर मुड़ जाती हैं और उनका आकार छोटा रह जाता है। गंभीर अवस्था में पौधे की बढ़वार रुक जाती है और फलन पर गहरा असर पड़ता है।

रोकथाम

1. सफेद मक्खी जैसे कीटों का प्रबंधन करना अनिवार्य है। इसके लिए थायोमेथाक्सम 25

डब्ल्यूजी @ 100 ग्राम प्रति
हेक्टेयर या इमिडाक्लोप्रिड
17.8 एस.एल. @ 125

- मिलीलीटर प्रति हेक्टेयर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
2. रोगी पौधों को खेत से निकालकर नष्ट कर दें।



पीला मोज़ेक रोग के लक्षण

2. लीफ स्पॉट (Leaf Spot)

लक्षण: पत्तियों पर छोटे-छोटे गोल, भूरे से काले रंग के धब्बे बनते हैं। धब्बों के चारों ओर हल्का पीला किनारा दिखाई देता है। रोग बढ़ने पर धब्बे आपस में मिल जाते हैं जिससे पूरी पत्ती सूख जाती है। प्रभावित पत्तियाँ समय से पहले गिर जाती हैं जिससे पौधे की बढ़वार रुक जाती है।

रोकथाम: रोग दिखने पर जिनेब या मैकोज़ेब @ 2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

3. पाउडरी मिल्ड्यू (Powdery Mildew)

लक्षण: यह रोग प्रायः ठंडे और शुष्क मौसम में अधिक होता है।

पत्तियों के ऊपरी भाग पर सफेद चूर्ण (पाउडर) जैसी परत जम जाती है। बाद में यह परत तनों और फलों पर भी दिखाई देने लगती है। रोग बढ़ने पर पत्तियाँ पीली होकर सूख जाती हैं और फल छोटे तथा विकृत हो जाते हैं।

रोकथाम:

i सल्फर (गंधक) @ 2 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें। यदि रोग अधिक फैला हो तो 10-12 दिन के अंतराल पर पुनः छिड़काव करें।

4. जड़ गलन रोग (Root Rot)

लक्षण: यह रोग मुख्यतः नर्सरी या छोटे पौधों में दिखाई देता है। पौधे का तना जमीन के पास से सड़ जाता है और पौधे अचानक

गिरकर मर जाते हैं। प्रभावित जड़ों पर सड़न और काले धब्बे स्पष्ट दिखाई देते हैं। खेत में रोग फैलने पर पौधों की संख्या काफी कम हो जाती है जिससे पैदावार प्रभावित होती है।

रोकथाम:

i बीज बोने से पहले कैप्टान या थाइरम @ 2.5 ग्राम प्रति किलो बीज से बीजोपचार करें।

ii रोगी पौधों को खेत से निकालकर नष्ट करें।

iii नर्सरी एवं खेत में जल निकासी का ध्यान रखें ताकि पानी का जमाव न हो।